# TENALI RAMAN AND THE PROUD PRIEST

# तेनाली रमन और घमंडी पुजारी

# Tenali Raman and the Proud Priest

# तेनाली रमन और घमंडी पुजारी

Subbashastri was a learned priest at King Krishnadevaraya's palace.

However, he was very proud and thought that he was better than everybody else. He was jealous of the clever Tenali Raman and always tried to insult him.

सुब्बाशास्त्री, राजा कृष्णदेवराय के महल में एक विद्वान पुजारी थे.

हालाँकि, वो बहुत घमंडी थे और खुद को बाकी सभी से बेहतर समझते थे. सुब्बाशास्त्री, चतुर तेनाली रमन से ईर्ष्या करते थे और हमेशा उसका अपमान करने की कोशिश करते थे.

At first, Raman ignored him. But when he couldn't stand it any longer, he waited for a chance to teach the vain priest a lesson.

पहले तो रमन ने उन्हें नजरअंदाज कर दिया. लेकिन जब वो इसे और बर्दाश्त नहीं कर सका, तो उसने पुजारी को एक सबक सिखाने के मौके का इंतजार किया.

One day, the King bought some fine Persian horses for his army.

Seeing Raman standing nearby, the King gave him one horse and ordered him to take good care of it.

एक दिन, राजा ने अपनी सेना के लिए कुछ अच्छे फ़ारसी घोड़े खरीदे.

राजा ने रमन को एक घोड़ा दिया और उसकी अच्छे से देखभाल करने का आदेश दिया.

Tenali Raman gladly accepted the horse.

He decided that this was his chance to teach Subbashastri a lesson, and made his plans.

तेनाली रमन ने घोड़ा सहर्ष स्वीकार कर लिया.

रमन को सुब्बाशास्त्री को सबक सिखाने का वो एक अच्छा मौका लगा, और फिर उसने अपनी योजना बनाई.

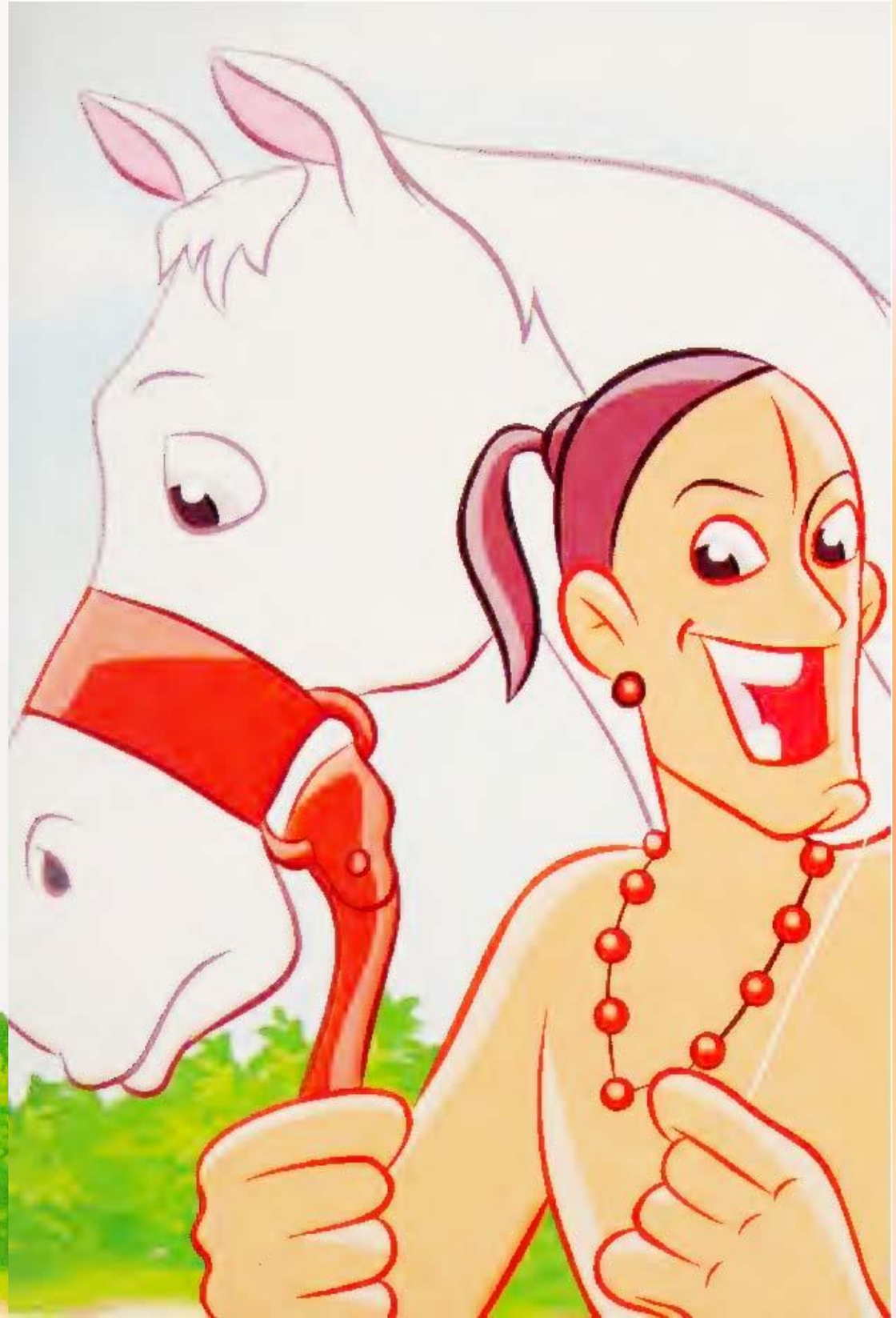

Raman built a special stable for the horse. This stable was covered from all sides and had just one small window.

Once a day, he fed the horse just one bundle of hay through this window. So, the poor horse remained hungry most of the time and would just wait to grab the hay.

रमन ने घोड़े के लिए एक विशेष अस्तबल बनवाया. वो अस्तबल चारों ओर से बंद था और उसमें केवल एक छोटी सी खिड़की थी.

दिन में एक बार, रमन इस खिड़की के माध्यम से घोड़े को घास का सिर्फ एक बंडल खिलाता था. इसलिए, बेचारा घोड़ा अधिकांश समय भूखा रहता था और हर समय नए घास के बंडल का इंतजार करता रहता था.

A month later, the King asked to see his Persian horses. He was pleased to find that all of them were strong and well trained.

Just then, Subbashastri asked, “But where is Raman and his horse?” Immediately a guard was sent to fetch them both.

एक महीने बाद, राजा ने अपने फ़ारसी घोड़ों को देखने की इच्छा ज़ाहिर की. उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उनके सभी घोड़े मजबूत और अच्छी तरह से प्रशिक्षित थे.

तभी सुब्बशास्त्री ने पूछा, "लेकिन रमन और उसका घोड़ा कहां है?" तुरंत रमन और उसके घोड़े को लाने के लिए एक गार्ड को भेजा गया.

Raman quickly came to the King and said, “Your Majesty, the horse is very stubborn and will not obey me. I request you to send Subbashastri with me to the stable to help me, since he is clever and knows so much about everything.”

रमन तुरंत राजा के पास आया और बोला, "महाराज, मेरा घोड़ा बहुत जिद्दी है और मेरी बात नहीं मानता है. मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरी मदद करने के लिए सुब्बाशास्त्री को मेरे साथ अस्तबल में भेजें, क्योंकि वो चतुर हैं और वो हर चीज के बारे में बहुत कुछ जानते हैं.”

**Subbashastri was thrilled and boasted, "Yes, I know the science of horses and can easily bring it here."**

**So he went with Tenali Raman to the stable.**

सुब्बाशास्त्री रोमांचित हुए और उन्होंने शेखी बघारी,
"हां, मैं घोड़ों का विज्ञान अच्छी तरह से जानता हूं
और उस घोड़े को आसानी से यहां ला सकता हूं."

इसलिए वो तेनाली रमन के साथ अस्तबल में गए.

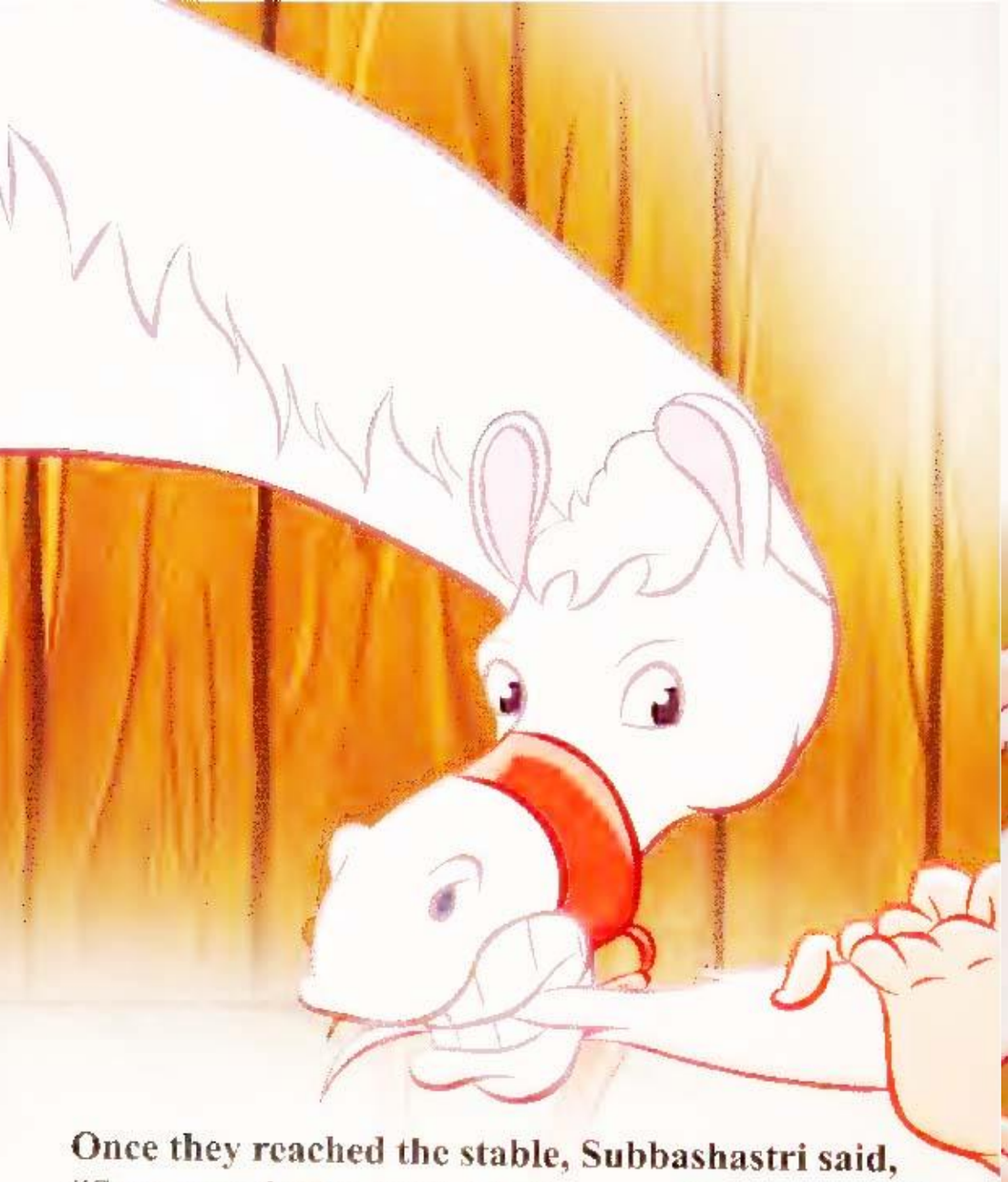

Once they reached the stable, Subbashastri said, "Stay away! This is no job for an ordinary jester."

He put his head through the tiny window to look at the horse. The hungry horse, thinking that the priest's long, white beard was hay, bit it hard and would not let go!

एक बार जब वे अस्तबल में पहुँचे, तो सुब्बाशास्त्री ने रमन से कहा, "दूर रहो! यह किसी साधारण विदूषक का काम नहीं है,"

सुब्बाशास्त्री ने घोड़े को देखने के लिए छोटी खिड़की से अपना सिर डाला. भूखे घोड़े ने यह सोचकर कि पुजारी की लंबी, सफेद दाढ़ी घास है, उसे जोर से काटा और दाढ़ी को पकड़ कर रखा!

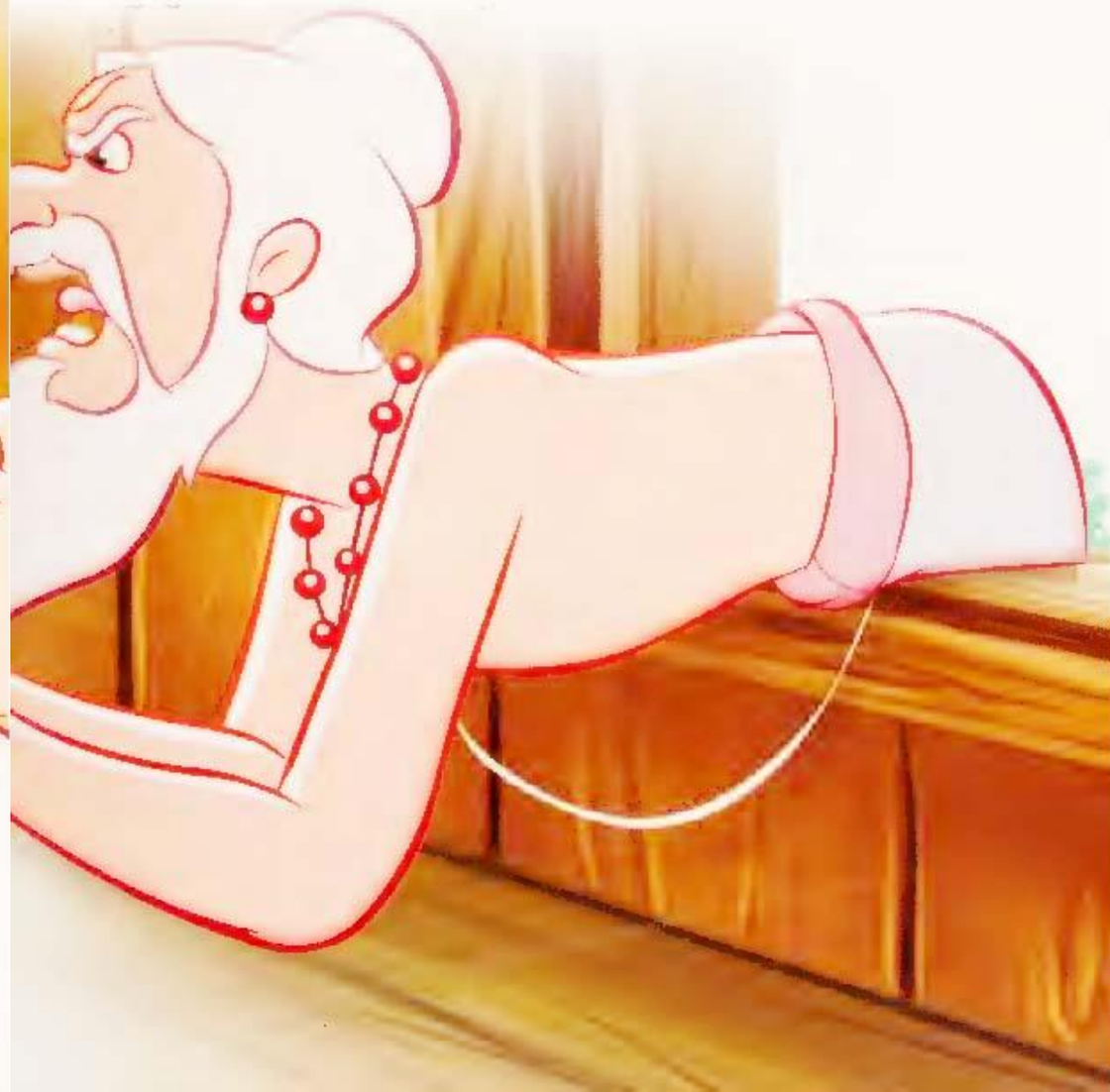

Poor Subbas! He was in pain and started screaming for help. Raman and a few others broke the stable.

The horse, still holding Subbashastri's beard in its mouth, came out. They all walked back to the King.

बेचारे सुब्बाशास्त्री! वो दर्द के मारे मदद के लिए चिल्लाने लगा. रमन और कुछ अन्य लोगों ने अस्तबल तोड़ दिया.

घोड़ा, अभी भी सुब्बशास्त्री की दाढ़ी अपने मुँह में दबाए हुए बाहर निकला. फिर वे सभी वापस राजा के पास गये.

When they reached the court, everybody, including the King, burst out laughing.

However the King soon understood that this was Raman's trick. He scolded him and told him to apologize to the priest.

जब वे दरबार में पहुँचे तो राजा सहित सभी लोग जोर-जोर से हँसने लगे.

हालाँकि, राजा जल्द ही समझ गए कि वो रमन की चाल थी. उन्होंने रमन को डांटा और पुजारी से माफ़ी मांगने को कहा.

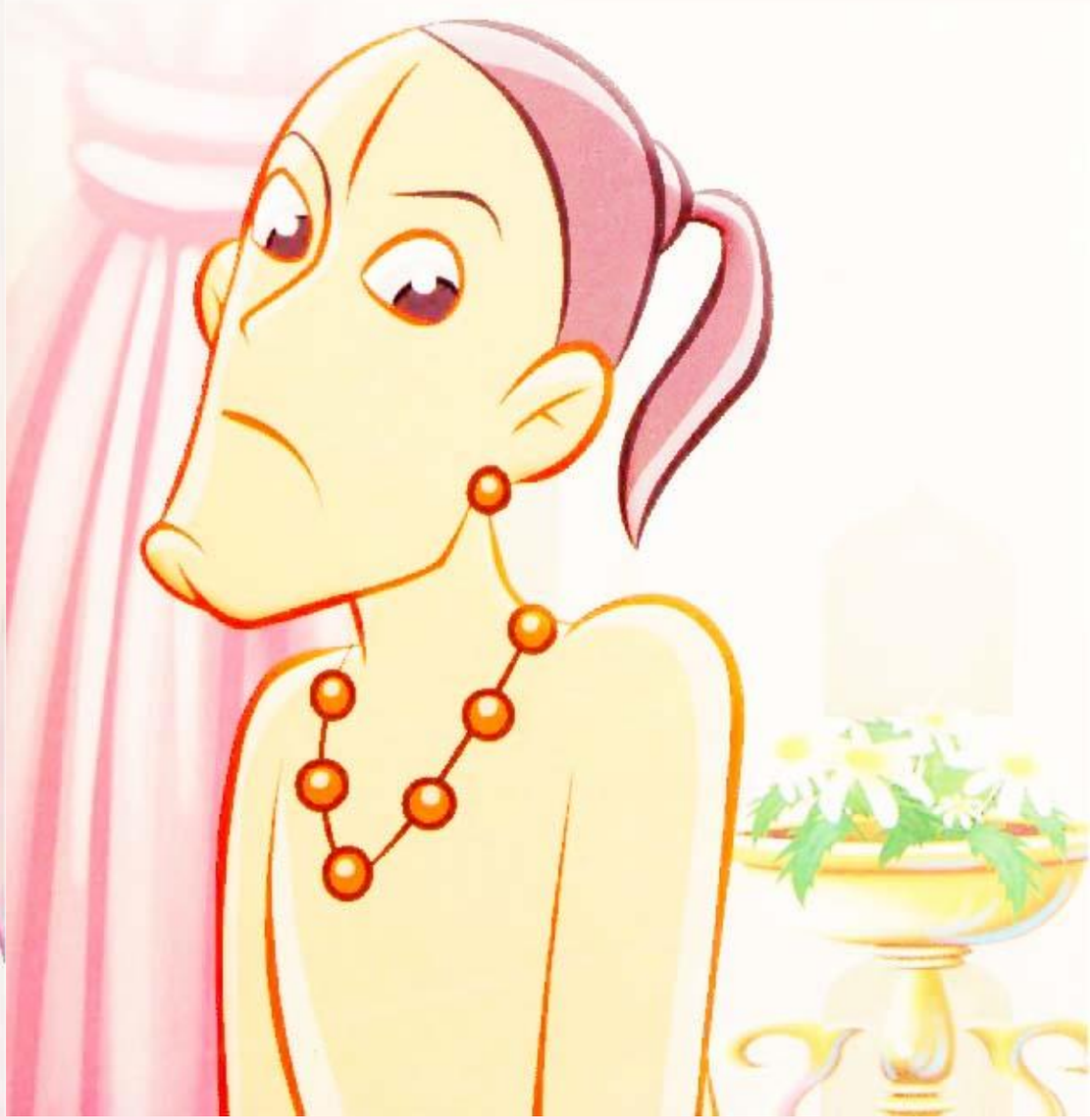

But Subbashastri had learnt his lesson. Before Raman replied, he said, "No, it was my fault. I have always humiliated him, but until now he has kept quiet."

He apologized to Raman, and was never mean to anybody again.

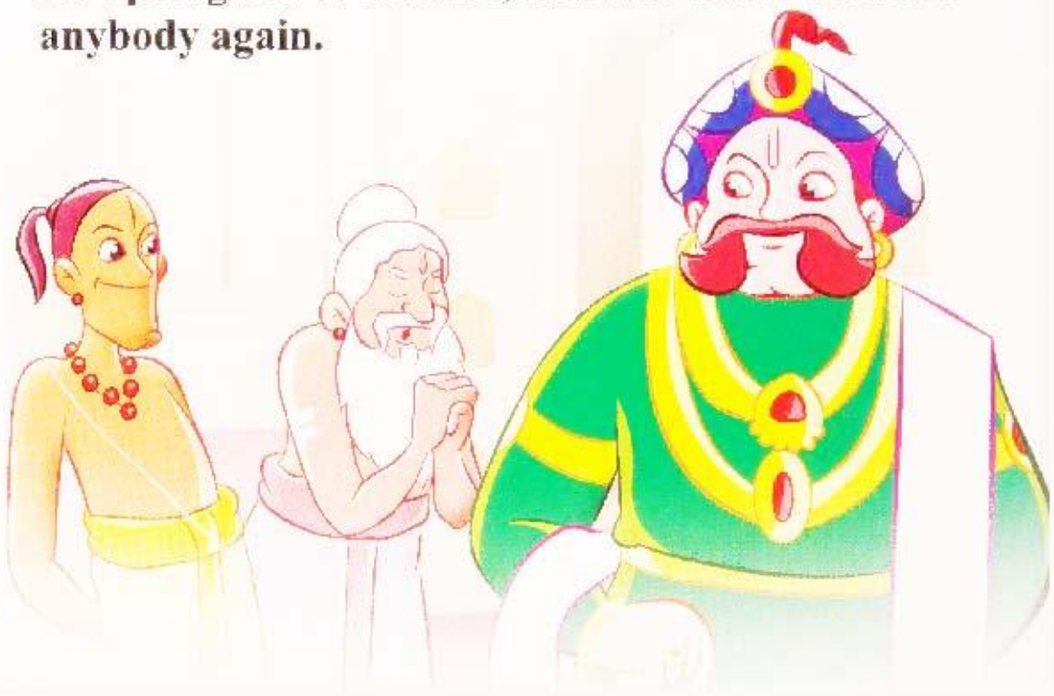

अंत

लेकिन सुब्बशास्त्री ने अपना सबक सीख लिया था. इससे पहले कि रमन जवाब देता, पुजारी ने कहा, "नहीं, यह मेरी गलती थी. मैंने रमन को हमेशा अपमानित किया था, लेकिन वो अब तक वह चुप रहा."

पुजारी ने रमन से माफ़ी मांगी और फिर कभी किसी के प्रति बुरा व्यवहार नहीं किया.